क्षितिज

स्व. श्रीमति मृदुला चतुर्वेदी 'प्राची'

पारुल चतुर्वेदी

क्षितिज

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website:*www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-81-19927-67-8

Price: ₹ 270.00

The opinions/ contents of the book is political satire and individual opinions/ thoughts of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

क्षितिज

स्व. श्रीमती मृदुला चतुर्वेदी ''प्राची''

पारुल चतुर्वेदी

क्षितिज

मिलते दिखते हैं मुझको वो,
आसमाँ–ओ जमीं उस क्षितिज पर।
कोई दिखता है हाथ फैलाये मुझको,
धरा के अंतिम छोर पर।

–पारुल चतुर्वेदी

स्व. माता-पिता को समर्पित

''इस योग्य बनी हूँ जिनके कारण,
शत्–शत् नमन मैं उनको करती हूँ।
यह पुस्तक–रूपी पुष्प चरणों में
उनके अर्पित करती हूँ ।।''

–पारुल चतुर्वेदी

प्रस्तावना

यह पुस्तक एक प्रयास है। मेरी कुछ अपनी रचनाएँ व मेरी स्व. माता, श्रीमती मृदुला चतुर्वेदी, जो ''प्राची'' के उपनाम से लिखती थीं की, कुछ स्वर्णिम रचनाएँ आप सब तक पहुँचाने का। उनके समय में पुस्तकों को प्रकाशित करवाना थोड़ा दुर्लभ कार्य था, जिस वज़ह से उनकी कृतियाँ व्यावसायिक रूप से कभी प्रकाशित नहीं हो पायी। परंतु वो अपनी अनमोल धरोहर मेरे हवाले कर सन् २००२ में ही हम सबको छोड़ प्रभु में विलय हो गयीं।

शायद उनकी ही कृपा से यह लिखने का हुनर मुझमें भी आया। मैं अपनी लेखनी की तुलना तो उनकी कृतियों से नहीं कर सकती, पर अपने मन की बात कविता के रूप में कहना जानती हूँ। मुझे हिन्दी साहित्य का भी कुछ खास ज्ञान नहीं है, पर बोलचाल की भाषा में अपने भाव व्यक्त करना जानती हूँ। इसलिये ही शायद मेरी कविताएँ आज के नौजवानों को भी उतनी ही भाती हैं जितनी कि हमारे बड़ों को।

इस पुस्तक के पहले भाग में मैंने अपनी रचनाएँ पेश की हैं। ये बातें हैं कुछ मेरे मन की, कुछ मेरे धर्म और धार्मिक कहानियों के किरदारों की, जिन्हें हम बचपन से सुनते आये हैं, कुछ देश और देशभक्ति की और कुछ समाज की। मूलतः मैं वो सब कुछ लिखती हूँ, जो मेरे दिल को छूता है और उम्मीद करती हूँ कि यही बातें आप सब के अंतः मन को भी छुयेंगी।

दूसरे भाग में मेरी माँ, श्रीमती मृदुला चतुर्वेदी ''प्राची'' की कुछ चुनिंदा कविताएँ हैं, जो मुझे अति प्रिय हैं। उनकी लेखनी भी दर्द के भावों से ही जन्मी हैं,

इसलिये अधिकाँश कविताओं में उन्होंने अपने और अपने आसपास सभी के दर्द को महसूस कर खूबसूरती से कविता का रूप दिया है। मेरी एक रचना ''मृदुला'' उन्हीं की संक्षिप्त जीवनी है।

यह किताब एक ''क्षितिज'' है, जहाँ मैं (यानी ''धरा'') और मेरी माँ (यानी ''आसमान'') एक जगह आके मिलते हैं और अपनी रोशनी चारों ओर बिखेरते हैं।

मैं स्वागत करती हूँ आप सबका इस क्षितिज पर और उम्मीद करती हूँ, आप सबको इसके जरिये अपना आसमाँ मिला जाये।

-पारुल चतुर्वेदी

आभार

इस पुस्तक को सजीव रूप देने में जिनका भी योगदान रहा उनके प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना प्रथम कर्तव्य समझती हूँ।

सर्वप्रथम, मैं सादर नमन करती हूँ, मेरे दूसरे माता–पिता श्री मनोज कुमार चतुर्वेदी एवं श्रीमती कांता चतुर्वेदी का, जो कहने को मेरे सास–ससुर हैं, परंतु मेरे लिये जो मेरे माता–पिता से कम पूज्यनीय नहीं हैं। उनका आभार तो कुछ शब्दों में व्यक्त भी नहीं कर सकती, बस इतना कह सकती हूँ कि उन्होंने सदा मेरे जीवन में मेरे माता–पिता की कमी पूरी की है।

तत्पश्चात्, आज मैं जो भी हूँ, उसे बनाने में अति महत्वपूर्ण योगदान है मेरे माता–पिता, स्व. श्री मनोज कुमार चतुर्वेदी एवं श्रीमती मृदुला चतुर्वेदी का, मेरे बाबा–दादी, श्री दया शंकर चतुर्वेदी एवं श्रीमती उर्वशी देवी चतुर्वेदी का, जिनका जन्म से ही मुझपर अपार स्नेह रहा, मेरी तीनों बुआएँ–फुफाजी, दोनों चाचा–चाची का, जिन सभी के लाड़–प्यार के बीच मैं पली–बढ़ी हूँ और मेरे सभी छोटे–बड़े भाई–बहनों का जिनके साथ से मेरा बचपन सुहाना बना।

इस पुस्तक को लिखने में व प्रकाशित करवाने में सबसे बड़ा योगदान मेरे पति, अमित का है, जिन्होंने हर कदम पर मुझे प्रोत्साहित किया और अपना पूर्ण सहयोग दिया। उन्हीं के निरंतर प्रोत्साहन की वज़ह से ये पुस्तक आप तक पहुँचना संभव हो पाया है।

दूसरा बड़ा सहयोग मेरे भाई अक्षय का भी है, जिसने अपने मूल्यवान सुझावों से इसे बेहतर बनाने में मेरी मदद की।

मेरे लिखने का बहुत बड़ा श्रेय मेरी नन्हीं सी बेटी आकृति को भी जाता है, जिसके आने के बाद ही एक लम्बे अरसे बाद मैं फिर से कलम उठाने को प्रेरित हुई और जिसने मेरा जीवन खुशियों से भर दिया।

मैं उन सभी लोगों का भी आभार व्यक्त करना चाहुँगी जिन्होंने मेरी कविताएँ पढ़ कर उन्हें सराहा और जिनका प्रोत्साहन मुझे निरंतर लिखते रहने को प्रेरित करता रहता है।

अंत में मैं आभार प्रकट करना चाहूँगी एड्ब्यूक्रियेशन पब्लिकेशन्स का जिनके सहयोग से यह पुस्तक आप सब तक पहुँचा पा रही है।

- पारुल चतुर्वेदी

पद चिन्ह

आइने के टूटे टुकड़ों को,
जोड़ रही हूँ लिख–लिख कर।
नज़्म इक–इक है बूँद गोंद की,
देखें क्या दिखता है जुड़ने पर।

टूटे ख़्वाब किसी के बिखरे हैं,
जिनको संजों रही हूँ इक–इक कर।
कर सकूँ जो पूरा जोड़ इन्हें,
शायद कुछ फ़क्र कर सकूँ मैं खुद पर।

शिद्दत ही किसी की थी ये जो,
इनायत बन बरसी है मुझ पर।
वरना तो दबाये बैठी थी,
ख़्यालों को मैं मन के भीतर।

कुछ पद चिन्हों के पीछे–पीछे,
चल पड़ी थी मैं इस राह पर।
एक मोड़ पे थम, वो कह गये मुझे,
बची जो राह है तू वो पार कर।

मिलते दिखते हैं मुझको वो,
आसमाँ–ओ जमीं उस क्षितिज पर।

कोई दिखता है हाथ फैलाये मुझको,
धरा के अंतिम छोर पर।

झाड़ रही हूँ धूल जमीं थी जो,
किसी की दबी हुई ख्वाहिशों पर।
देखा कोई छोड़ गया था गढ़ा ख़ज़ाना,
नाम मेरा उस पर लिखकर।

देर लगी आने में मुझको,
पर आयी तो हूँ इस मुकाम पर।
दिखती है साफ जहाँ से मंज़िल,
दम लूँगी अब तो वहीं पहुँच कर।

- पारुल चतुर्वेदी

विषय-सूची

भाग-1

शीर्षक	पृष्ठ सं.
मन की बात	-
मृदुला	03
माँ	09
पिता	11
माँ–बाप	14
पता होता गर....	16
कुछ कहना तो था	18
राखी	21
फुर्सत का ज़माना	24
यादों के पंछी	28
हम क्या–क्या भूल गये	31
बचपन के दिन	33
बाबा	37
अब मैं बूढ़ा होने लगा हूँ	42
जीवन साथी	45
प्यार	47
मुट्ठी भर ख़्वाहिशें	50
खट्टी–मीठी तकरार	52

बेटी माँ का दुसरा रुप 55
माँ का गौरव 58
बड़ी हो गयी है कितनी 60
मम्मी अच्छी है 63
नौ महीने की बेटी 66
खामोशी 69
आँसू 71
वक्त 74
पुश्तैनी मकान 77
मीठी नींद 81
मत समझो कि उदास हूँ मैं 84
एक ब्याह के दो पहलू 87
दुख की गागर 89
बाबा–दादी 92
माँ का निष्पक्ष प्रेम 95

धर्म की बात -
अब क्यूँ अवतार नहीं लेते 99
देवकी की व्यथा 102
माँ की विवशता 105
घर आये राम 107
शोकाकुल राम 110
राधा की कुण्ठा 115

देश की बात -
ताज के आम हीरो 120
कलाम 124

भारत माँ के लाल 126
दुश्मन देश 129
हिंदी मेरी मातृभाषा 132

समाज की बात -
असंगत समाज की विडम्बना 135
भ्रष्टाचार 138
लड़की का अस्तित्व 141
सच की गवाही 144
बूढ़ा दर्जी 147
रिश्ते 150

भाग-2

आसमाँ -
कन्यादान 153
बेटी की माँ 156
दर्द 159
हाल रहने दो हमारा 160
खंडहर 162
मुझे अब किसी से प्यार नहीं 164
बेटा 166
भूकम्प 169
पढ़कर तेरी मधुशाला 171
दो हमसफर 175
पथ भ्रम 179
चाँद और राका 181
पीड़ा 185
लगी आग अबबुझाये कोई 187

क्षितिज

यह किताब एक 'क्षितिज' है जहाँ मैं (यानी 'धरा') और मेरी माँ (यानी 'आसमान') एक जगह आके मिलते हैं।

यह इसलिये भी एक क्षितिज है क्यूँकि :
मेरी कवितायें दो पीढ़ियों के बीच की दूरी मिटाती हैं
कुछ बीते पलों को आने वाले युग से मिलाती हैं
कुछ खट्टी यादों को मीठे ख्वाबों से सजाती हैं
कुछ गमगीन रातों को रंगीन सुबह दिखाती हैं
कुछ कहानियां भगवान की सुनाती हैं
कुछ देशभक्ति का एहसास जगाती हैं
तो कुछ समाज को आइना दिखाती हैं
जैसे आसमाँ छूता है जमीं को क्षितिज पर
वैसे ही ये हर किसी के मन को छू जाती हैं

मैं स्वागत करती हूँ आप सबका इस क्षितिज पर और उम्मीद करती हूँ आप सबको इसके जरिये अपना आसमाँ मिल जाये।

लेखक के बारे में.....

इस पुस्तक की लेखिका, पारुल चतुर्वेदी, का जन्म कानपुर (यू.पी.) में हुआ। सेंट मैरीज कॉन्वेंट स्कूल से उन्होंने शुरूआती शिक्षा ग्रहण की। फिर कानपुर से ही बी.टेक. और एम.बी.ए. किया। कुछ समय दिल्ली में नौकरी करने के पश्चात, शादी के बाद से वे कुवैत में स्थित हैं। यह उनकी कविताओं का पहला संग्रह है। साथ ही इस संग्रह में उनकी स्व. माँ व उनकी प्रेरणास्त्रोत, श्रीमति मृदुला चतुर्वेदी 'प्राची' की भी कुछ चुनिंदा कविताएँ हैं। दुर्भाग्यवश ४२ वर्ष की आयु में ही उनकी मृत्यु हो गयी परंतु उनकी लेखनी जीवित रही। उसी के कुछ अंश इस पुस्तक में संजोये गये हैं।

लेखक से संपर्क हेतु –
parul2608@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-81-19927-67-8
9 788119 927678